परामर्श प्रमुख

श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद
श्री प्रदीपकुमार जैन, रायपुर

प्रधान संपादक

सिंघई राजेन्द्र जैन 'बागो', 9424013136

सह संपादक

श्रीमती अनुपमा–रजनीश जैन, 9009066884
श्रीमती साधना–सुनील जैन, 8602696165
श्री विशाल जैन, 9453167716

कोषाध्यक्ष

सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक

राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972
खुशालचंद जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक

बाहुबली जैन, 9827247847

शिरोमणि संरक्षक –

श्री प्रदीपकुमार जैन, रायपुर
श्री सुधेश जैन, इन्दौर

संरक्षक –

श्री राजकुमार जैन, छुईखदान

सहयोगी सदस्य –

श्री संतोष जैन, ग्रीन पार्क भोपाल

श्री राजकुमार जैन, छुईखदान

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/–
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/–
संरक्षक (अ.जा.)	5100/–
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/–
सहयोगी सदस्य (10 वर्ष)	1100/–

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855 IFSC Code: SBIN0030134 में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/–
फुल पेज (अंदर)	11000/–
1/2 पेज	5000/–
1/4 पेज	3000/–
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/–
शोक संदेश फोटो सहित	1000/–
बॉयोडाटा फोटो सहित	350/–

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखरजी को जैन तीर्थ घोषित करने के लिए ज्ञापन दिया

सचिन जैन, बड़ौत । विश्व जैन संगठन द्वारा सर्वोच्च जैन तीर्थ पारसनाथ पर्वत को बिना जैन समाज की सहमति के वन्य जीव अभ्यारण्य का एक भाग घोषित कर पर्यटन स्थल बनाकर तीर्थ की स्वतंत्र पहचान, पवित्रता नष्ट करने वाली अधिसूचना रद्द कराने और पर्वत को पवित्र 'जैन तीर्थस्थल' घोषित कराने की मांग हेतु दिल्ली के प्रसिद्ध जैन लाल मंदिर, लाल किला से राजघाट तक 2 अगस्त को विशाल पैदल मार्च किया गया। विशाल पैदल मार्च के संयोजक विश्व जैन संगठन के अध्यक्ष संजय जैन ने बताया कि केंद्र व झारखंड सरकार को दिए निवेदनों पर कोई कार्यवाही न किये जाने के विरोध में 2 अगस्त को काला दिवस के रूप में मनाते हुए विशाल पैदल मार्च का आयोजन किया गया। जिसमें जैन संत पूज्य क्षुल्लक श्री योगभूषणजी महाराज, गुरु गणी श्री राजेंद्रविजयजी महाराज और भट्टारक सौरभ सैन जी ने अनादि काल से जैन तीर्थ की स्वतंत्र पहचान और प्राचीन प्राकृतिक स्वरुप को पूर्ववत बनाये रखने और झारखण्ड सरकार व वन मंत्रालय से शास्वत जैन तीर्थ को वन्य जीव अभ्यारण्य व पर्यटन स्थल आदि की सूची से बाहर करने की मांग की गई। लाल किले से राजघाट पैदल तीन किमी है। उमस भरी गर्मी में धूप में पैदल चलकर सभी ने श्री सम्मेदशिखर जी की रक्षा के लिए सुबह 10 बजे लाल किला पहुंचने से लेकर राजघाट तक किसी ने ना ही कुछ खाया और न ही पानी पिया।

दिल्ली की प्रमुख जैन संस्थाओ के पदाधिकारी भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के पूर्व महामंत्री श्री चक्रेश जैन, मदन लाल जैन, पवन गोधा, विकास जैन, नीरज जैन, पुनीत जैन, महासभा से सुमित जैन और दिल्ली व अन्य राज्यों से आये विभिन्न जैन संस्थाओं व अन्य गणमान्यों ने झारखंड और केंद्र सरकार से गजट रद्द कर पर्वत का वंदना मार्ग अतिक्रमण मुक्त, यात्री पंजीकरण, सामान जांच के लिए दो चेक पोस्ट, पर्वत पर सोलर लाईट और पर्वत व मधुबन की पवित्रता के लिए सम्पूर्ण क्षेत्र को मांस–मदिरा मुक्त पवित्र **'जैन तीर्थस्थल'** अतिशीघ्र घोषित करने की मांग की।

इधर उत्तरांचल दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री शैलेंद्र जैन अलीगढ़ एवं महामंत्री श्री प्रवीण कुमार जैन संपादक दैनिक विश्व परिवार झांसी ने भारत के प्रधानमंत्री एवं झारखंड के मुख्यमंत्री को भेजे पत्र में उत्तर भारत के संपूर्ण तीर्थ क्षेत्रों व जैन समाज की ओर से मांग की कि जैन धर्म के शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखरजी की मर्यादा को बनाए रखा जाए और वहां होने वाले अतिक्रमण को रोकते हुए इस तीर्थ पर पूरी तरह पवित्रता कायम की जाए।

हर घर तिरंगा लहराया

सर्वविदित है कि हम इस वर्ष आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। इस गौरवपूर्ण दिवस को सरकार ने अमृत महोत्सव का नाम दिया है,और इसे स्मरणीय बनाने के लिए सरकार ने हर घर तिरंगा अभियान प्रारंभ किया है। इसका लक्ष्य भारत के हर घर पर तिरंगा लहराने का है। सरकार द्वारा इसके लिए 20 करोड़ घरों में तिरंगा लहराने का निश्चय किया गया है। देश की पूरी जनता के लिए सरकार और स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की यह अपील है कि वह 13 अगस्त से 15 अगस्त के बीच 20 करोड़ घरों में तिरंगा लहराएं। इस अभियान का उद्देश्य देश के नागरिकों के दिलों में देशभक्ति की भावना को बढ़ाना और देश के लिए प्रेम जागरूक करना है, साथ ही हमारे राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान की भावना को पैदा करना है ताकि हर देशवासी अपने देश और ध्वज की आन बान और शान के लिए हमेशा आगे खड़ा रह सके।

तिरंगे के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि बीसवीं शताब्दी में जब स्वदेशी आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा तो एक राष्ट्रीय ध्वज की जरूरत महसूस हुई। स्वामी विवेकानंद की शिष्या सिस्टर निवेदिता ने सबसे पहले इसकी परिकल्पना की। फिर 7 अगस्त 1906 को कोलकाता में बंगाल के विभाजन के विरोध में एक रैली हुई जिसमें पहली बार तिरंगा झंडा फहराया गया। आज जो तिरंगा भारत की शान है, उसे डिजाइन करने में पिंगली वेंकैया का बहुत बड़ा योगदान था, वो एक स्वतंत्रता सेनानी थे। पिंगली वेंकैया ने भारत को एकजुट करने वाला राष्ट्रीय ध्वज दिया। तब इस ध्वज में, केसरिया, सफेद और हरे रंग की पट्टीयां और बीच में चरखा था।

इस ध्वज की ऊपरी पट्टी में केशरिया रंग देश की शक्ति, साहस, त्याग और बलिदान का प्रतीक माना जाता है। बीच में स्थित सफेद पट्टी शांति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दर्शाती है। सफेद पट्टी पर स्थित चरखा देश की आर्थिक प्रगति का सूचक था। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में एक ध्वज समिति का गठन किया गया और उसमें यह फैसला किया गया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के झंडे को कुछ परिवर्तनों के साथ राष्ट्र ध्वज के रूप में स्वीकार कर लिया जाए, इसमें चरखे के स्थान पर अशोक चक्र या धर्म चक्र को रखा गया, जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनाए गए सारनाथ मंदिर से लिया गया है। इस चक्र को प्रदर्शित करने का आशय यह है कि जीवन गतिशील है और रुकने का अर्थ मृत्यु है। यही तिरंगा भारत देश के स्वतंत्र देश होने का संकेत देता है। 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार किया।

तिरंगा फहराते समय इन बातों को रखे ध्यान – * झंडे का प्रयोग व्यावसायिक उद्देश्य के लिए नहीं किया जायेगा। * यदि आप किसी व्यक्ति को सलामी दे रहे है तो झंडे को झुकाया नहीं जायेगा। * किसी भी ड्रेस या यूनिफार्म को झंडे के रूप में प्रयोग नहीं किया जायेगा। झंडे को किसी भी रुमाल, तकिया, या बाकि किसी भी ड्रेस पर नहीं छाप सकते। * झंडे पर किसी भी तरह का विज्ञापन, नोटिफिकेशन या कोई अभिलेख नहीं लिखा होना चाहिए। * किसी भी अन्य झंडे को भारतीय झंडे के बराबर ऊपर नहीं फहराया जाना चाहिए।

तो आइए हर घर तिरंगा फहराएं और देश की शान बढ़ाएं, जय हिंद, जय भारत, जय हिन्दू राष्ट्र ।

–अनुपमा जैन, सहसंपादिका

105 पूर्णमति माताजी के चतुर्मास कलश स्थापना का साक्षी बना इंदौर

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की परम शिष्या परम पूज्य 105 स्वर कोकिला आर्यिका पूर्णमति माताजी का चतुर्मास इंदौर के छत्रपति नगर के दयालबाग में कलश स्थापना महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ। महोत्सव की शुरुआत समाज की अनेक महिला मंडलों के द्वारा शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम व मंगलाचरण के साथ हुई। चातुर्मासिक कलश स्थापना महोत्सव की शुरुआत मंगलाचरण संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के चित्र अनावरण के साथ हुई इस अवसर पर नगर व बाहर से आए हुए अनेक श्रावकों की मौजूदगी के साथ विद्वानों व पंडितों का मंगल सानिध्य भी रहा । इसके पूर्व छत्रपति नगर मंदिर से भव्य मंगल जुलूस में हजारों श्रावकों ने उत्साह पूर्वक सहभागिता निभाई । मंदिर जी से कार्यक्रम स्थल दयालबाग तक भक्तों ने माताजी का विभिन्न मंचों से हार्दिक अभिनंदन किया। समाज के कई प्रतिष्ठित परिवार मंगल कलश लाभार्थी रहे। संगीतकार पंकज जैन की टीम ने मनोहरी भक्ति गीतों से स कार्यक्रम को धर्ममय बना दिया कार्यक्रम का संचालन विपुल जैन ने किया एवं आभार कैलाश नेता एवं राजेन्द्र सुपारी ने माना ।